लकी प्रोजेक्ट गाइड-२

प्रेषक : बिग डिक

'लकी प्रोजेक्ट गाइड 'मेरी ज़िन्दगी का वो रूहानी अनुभव है जिसे मैं ताज़िन्दगी नहीं भूल पाऊंगा... उसे शब्दों में बयाँ कर पाना बहुत मुश्किल है। मैंने सोचा नहीं था कि कहानी इतनी लंबी हो जायेगी कि उसे दो-तीन किश्तों में लिखना पड़ेगा... इसीलिये मैंने उसे सिर्फ़ "लकी प्रोजेक्ट गाइड" नाम दिया था.. पर अब तो उसे "लकी प्रोजेक्ट गाइड-१" ही कहना पड़ेगा...

खैर.. "लकी प्रोजेक्ट गाइड" में आपने पढ़ा कि हम दोनों ऑर्गाज़्म पर पहुँच चुके थे... पसीने से तर-बतर हो चुके थे.. मेरा लंड शशि की चूत द्वारा निचोड़ा जा चुका था.... मैंने उसकी कमर के खम को पकड़ा और एक झटके से पूरे लंड को बाहर निकाल दिया...शशि के योनिपटों पे घिसटता हुआ लंड जैसे ही बाहर निकाला.. उसके नितंब थरथराये और उसके मुंह से एक संतुष्ट और मादक आवाज़ निकली..."आऽऽऽऽऽऽह....."

हम दोनों फ़र्श पर ही लेट गये...निर्वस्त्र...उनींदी आँखों से छत को ताकते हुये...

जाने कब मेरी आँख लग गई थी पता ही नहीं चला....

अचानक खुली तो देखा कि शशि मेरे सुकड़े हुये लंड का फ़ोरस्किन खिसका रही थी...और सुपाड़े के सुराख को (जहाँ से वीर्य निकलता है) बड़े प्यार से निहार रही थी....

और धीरे-धीरे अपने जीभ के अग्रभाग को नुकीला सा करके उसमें मानो घुसेड़ने की कोशिश कर रही थी...

नसों में फ़िर से संचार शुरू हो गया.... और इतनी तेज़ हुआ कि कुछ ही पलों में मेरा लंड अपनी पूरी लम्बाई में आ गया...

उसने फ़ोरस्किन को पूरा नीचे खींच दिया.... सुपाड़ा बड़ा ही भयावह लग रहा था... लाल... खूब फ़ूला हुआ...

उसने अपना थ्री-मेगापिक्सेल कैमरे वाला मोबाइल उठाया... क्लिक... क्लिक... क्लिक... अलग-अलग कोणों से तकरीबन दस फ़ोटो लिये.... कैमरा एक तरफ़ रखा.... अपनी दोनों टाँगों को मेरे पूरी अदा से इठलाते हुये मेरे कमर के आजू-बाजू रखा..... अपना मुँह मेरी तरफ़ झुकाया... अपने सुडौल स्तन मेरी छाती पे दबाए.... चुम्बन लिया... इस तरह उसके नितम्ब थोड़ा ऊपर हुये.... मेरा लंड अपने हाथ से पकड़ा.... और सुपाड़े को योनिद्वार पर रगड़ने लगी....

जितनी सिसकारियाँ उसके मुँह से निकल रही थीं उससे ज़्यादा मेरे मुँह से निकल रही थीं.... रहा नहीं जा रहा था... हाय ये भूख.... जितना खाओ उतनी ही बढ़ती है.... हाय ये प्यास... कभी ना खत्म होने वाली प्यास...

आधे घंटे पहले लग रहा था कि बस आज के लिये काफ़ी हो गया.. और अब... देर करने का मन नहीं हो रहा था.... मैं बेसाख़्ता उसके होठों को चूसने लगा... उसकी गर्दन चाटते हुये मेरी जीभ उस दरार में पेवस्त होने लगी जिसे वो ऑफ़िस में छलकाती दिखाती थी.... मेरी नाक भी दोनों स्तन के बीच आ गई थी....और मैं उस खुश्बू से मदहोश होता जा रहा था....दोनों हाथों से उसके स्तन अगल-बगल से इस तरह भींचा..कि मेरी नाक...मेरा मुँह....मेरी जीभ...और मेरा पूरा वज़ूद उसके अमृत कलशों के बीच समा गया...मुझे लगा...स्वर्ग अगर कहीं है....तो यहीं है...यहीं है...बस यहीं है....

अचानक मुझे लंड पे कुछ नमी का अहसास हुआ....

"आय एम ड्रिपिंग".... उसने वही शोख.... वही मादक... वही सरसराती सी आवाज़ में मेरे कान में

Copyright © Indian Porn Empire - 2009. All Rights Reserved.

कहा.....

और आहिस्ता-आहिस्ता मेरा सुपाड़ा उसकी गहराइयाँ नापने लगा.... अंदर काफ़ी लसलसापन था.. गर्माहट थी....

उसने कुछ सेकंड के लिये अपने चूतड़ों को वैसे ही हवा में रखा.... फ़िर धीरे धीरे इस तरह ऊपर-नीचे हिलाने लगी कि लंड का सिर्फ़ तीन-चार इंच अंदर-बाहर हो रहा था.....

करीब उसके बीस बार ऐसा करने के बाद मैं इतना उत्तेजित हो गया कि अपने कूल्हे की सारी मांस्पेशियों की ताकत इकट्ठा करके एक जोरदार झटका ऊपर की ओर दिया..

कि पूरा का पूरा लंड सरसराता हुआ अंदर हो गया....

"ओ माय गॉड"...वो चीखी...

और भरभराते हुये मेरे लंड को चूत में निगलते हुये बैठ गई....

लंड को अंदर लिये-लिये ही अपने चूतड़ों को आगे-पीछे और गोल-गोल घुमाने लगी.....

उसकी झाँटें मेरी झाँटों को रगड़ते हुये अजीब उत्तेजना पैदा कर रही थी..... पन्द्रह-बीस मिनट तक यही चलता रहा। कभी मैं उसके दोनों स्तनों को पकड़ता... उन्हें चूसता... चाटता.... और कभी उसके चूतड़ों में चपत लगाता... उन्हें मसल देता फिर नीचे को ओर(अपनी ओर) धक्का देता..।

अब मैं भी अपनी गांड़ का छेद सिकोड़कर अपनी चूतड़ों को ऊपर नीचे कर रहा था... वो और जोर सी चीखने लगी... चीखते-चीखते उसका पूरा शरीर मेरे ऊपर गिर सा पड़ा.... धड़कनें और साँसें धौंकनी की मानिन्द चल रही थीं....वो अभी भी चूतड़ों को धीरे-धीरे हिला रही थी....उसकी चूत से निकला कामरस मेरी झाँटों और अंडों को भिगोता हुआ अनवरत बहता जा रहा था ....

कुछ देर में वो निश्चेष्ट सी मेरे ऊपर पड़ी थी, अचानक मैंने अपने चूतड़ उछालने की स्पीड बढ़ा दी....करीब पच्चीस धक्कों के बाद मैं इतने जोर से स्खलित हुआ कि एक तेज़ धार उसके चूत के अंदर के दीवारों पर पड़ी और वो चिहुँक उठी....मैं धीरे-धीरे हिलाता हुया शांत हो गया.....पुरसुकून शांत...संतुष्ट और तृप्त...!!

शशि....अगर तुम कहीं यह पढ़ रही हो... तो शुक्रिया... मुझे वह शाम देने के लिये... वो यादगार लम्हा देने के लिये... (और अपनी दो और सहेलियाँ देने के लिये..)

काफ़ी देर तक वैसे ही पड़े रहने के बाद हम दोनों उठे... चाय बना के पी ... और मैं उसे एक और शाम का वादा करके उसके कज़िन के घर छोड़ आया... मेरे लंड की फ़ोटो उसके पास रह गई थीं... उसके चूत की यादें मेरे साथ आ गईं थीं।

समय अपनी गति से चलता रहा... प्रोजेक्ट अपनी गति से चलता रहा....

उस दिन मैं शाम को ऑफ़िस से लेट लौट रहा था.... ट्रैफ़िक बहुत ज़्यादा थी... मेरी बाइक बस स्टॉप के ठीक सामने थी... अचानक पीछे से आवाज़ आई.. "सर"

मैंने ध्यान नहीं दिया... एक हाथ ने मेरे कंधे को छुआ... वो स्मिता थी... साँवली... बड़ी-बड़ी आँखों वाली... ढीला-ढाला सा सलवार कुर्ता पहने हुये... दुपट्टा पूरे वक्षस्थल को ऐसे ढके हुये कि जिसमें देखकर लगता था कि अंदर खाली है।...कुर्ता इतना ढीला और बड़ा था कि नितम्भ का आकार भी नहीं दिखता था। कुल मिला कर उसमें कोई सेक्स-अपील नहीं नज़र नहीं आती थी।

"स्मिता?... हियर?... व्हाट हैप्पेंड?... मिस्ड योर बस?"

"यस सर...वुड यू प्लीज़ ड्रॉप मी टू नेक्स्ट स्टॉप?"

"ओह श्योर?" ऊपर से उत्साहित और अंदर से खीझा हुआ मैं बोला।

स्मिता पीछे क्रॉस-लेग (टाँगों को दोनों तरफ़ करके) बैठी, जैसे ही ट्रैफ़िक कम हुआ, मैंने बाइक बढ़ा दी। मैं उसको जल्दी से पहुँचा देना चाहता था पर अफ़सोस कि अगले स्टॉप में भी कोई बस नहीं थी। रिमझिम बारिश शुरू हो गई थी।

"अब क्या करें?" मैंने कहा।

Copyright © Indian Porn Empire - 2009. All Rights Reserved.

"सर... मैं अपना मोबाइल भूल गई... आपके मोबाइल से एक कॉल कर लूँ?"

"श्योर.."

तब तक बारिश कुछ तेज हो गई थी, हम दोनों भीगने से बचने की नाकाम कोशिश करते रहे।

बादल छाये रहने के कारण शायद मोबाइल में नेटवर्क नहीं था, आसपास कोई बूथ भी नज़र नहीं आ रहा था।

"अर्जेंट है?" मैंने पूछा।

"हाँ..." उसने कहा।

मेरा घर वहाँ से सौ कदम पे था।

मैंने बेमन से कहा,"चलो मेरे घर.. लैंडलाइन से कर लेना !"

सुनते ही उसकी आँखों में अजीब सी चमक आई...

खैर हम लोग घर पहुँचे.... काफ़ी भीग चुके थे... उसने फ़ोन लगाया और जाने क्या-क्या बातें करती रही... मैं भीतर जाकर कपड़े बदल कर आ चुका था, वो तब भी फ़ोन पे लगी हुई थी... बात करते-करते अनजाने में (यह मुझे तब लगा था... बात में पता चला कि वह हरकत जान-बूझकर की गई थी) उसने भीगा दुपट्टा निकालकर एक तरफ़ रख दिया और मेरे पूरे शरीर में एकबारगी झुरझुरी सी हो गई.... सामने का नज़ारा ही कुछ ऐसा था...

उसने लो-कट (गहरे गले वाला) कुर्ते के अन्दर एक महीन सा शमीज़ पहन रखी थी जो कि पानी में उसके बदन से चिपक गई थी और उसके ठंड से नुकीले हो चुके काले-काले निप्प्ल साफ़ नज़र आ रहे थे ! पॉपिन्स के साइज़ का ऐरोला भी दिखाई दे रहा था और झटका खाने वाली बात यह थी कि उसके स्तन एकदम तने हुये बहुत बड़े-बड़े थे, इतने बड़े जिसकी मैंने कल्पना भी नहीं की थी, जिनको वो ढीले-ढाले कुर्ते और दुपट्टे के नीचे ढकी रहती थी। स्तनों का आकार साफ़ दिखाई दे रहा था और मेरी हालत वैसी ही हो रही थी जैसे उपवास के दिन मिठाइयों को देखकर होती है...

उसने फ़ोन रखा और अचानक अपना सर ऊपर उठाया और मेरी चोरी पकड़ी गई (तब तक तो मैं उसे चोरी ही समझ रहा था.... मुझे थोड़ी पता था कि जाल बिछा हुआ था... मैं दाना चुग रहा था... और सैयाद की आँखों में चमक थी... शिकार को दाना चुगते देखने की चमक..... या खुदा.... इन लड़कियों के लिये कितना आसान होता है लड़कों को पटाना...)

कातिल मुस्कुराहट के साथ उसने पूछा,"सर आपके पास आयरन बॉक्स है?"

"य.य..यस....है !" मेरी तंद्रा भंग हुई...

"मैं ये कुर्ता आयरन कर लेती हूँ...थोड़ा सूख जायेगा... तब तक इफ़ यू डोंट माइन्ड... आपका कोई शर्ट पहन लूंगी !"

"नो प्रॉब्लम..."

मैं आगे-आगे बेडरूम की तरफ़ चला... वो पीछे-पीछे आई... मैं एक शर्ट निकालने लगा... वो मेरी तरफ़ पीठ करके कुर्ता उतारने लगी... मैंने शर्ट उसको दिया..

"प्लीज़ बाहर जाइये ना !"

तब तक भी मैं उसे शर्मीली सी लड़की समझ रहा था।

मैं हॉल में चला गया... अंदर एक तूफ़ान सा उठा हुआ था... स्मिता के निप्पल.. ऐरोला.. पुष्ट स्तन... मेरी आँखों के सामने घूम रहे थे और मन ही मन आत्मग्लानि भी हो रही थी कि मैं इतनी सीधी-साधी लड़की के बारे में इस तरह से सोच रहा था। अचानक स्मिता आ गई... मेरी शर्ट पहने हुये.... चुस्त... इतना चुस्त कि दूसरे नम्बर का बटन जैसे खुला जा रहा था... वक्ष बाहर छलक रहे थे... थोड़ी सी झिर्री से स्तन की अंदर की मादक दरार और गोलाइयाँ झाँक रहे थे... और मेरी नज़र हट नहीं रही थी.... हालांकि स्मिता साँवली सी थी पर उसके स्तनों का रंग गोरा-गोरा था...

Copyright © Indian Porn Empire - 2009. All Rights Reserved.

शर्ट चूँकि शॉर्ट-शर्ट थी.... उसकी कमर तक ही आ रही थी और कमर के नीचे का हिस्सा सिर्फ़ भीगे हुई सी सलवार में ढका था...... उस जगह मुझे चूत का त्रिकोण साफ़ दिखाई दे रहा था...उस त्रिकोण का रंग थोड़ा गहरा था, शायद उसकी झाँटें भी भीगकर कपड़े से चिपक गई थीं... त्रिकोण.... जादुई त्रिकोण..!! मेरी नीयत डोल चुकी थी.... अगर स्मिता सीधे मेरी आँखों में देखती तो लाल डोरे मेरी चुगली कर देते।

"इसको कहाँ लटका दूँ?" उसने अपना कुर्ता हवा में लहराया...

"उस कमरे में...! चलो...!" मैंने दूसरे कमरे की तरफ़ इशारा किया...

वो आगे-आगे चली...और मानो कयामत ही आ गई...उसके पुष्ट नितम्बों के आगे शशि के नितम्ब कुछ भी नहीं थे... मस्त उभरे हुये... गोल-गोल आकार के... जैसे साँचे में ढले हुये... कसे हुये... एक लय में ऊपर नीचे होते हुये... तीव्र इच्छा हुई कि इन्हें छू लूँ.. सहला लूँ... भींच लूँ...... उस दरार को महसूस कर लूँ जो इन मदभरी घाटियों के बीच है...

मैं कितना ग़लत था.... स्मिता में सेक्स अपील था... और गज़ब का सेक्स अपील था.... बस छुपा हुआ था.... अनछुआ था... आवृत था... और यहाँ मैं बेचैन था... उसे छूने उघाड़ने के लिये... छूने के लिये... अनावृत करने के लिये...

"यहाँ?"....उसने पूछा...एक रस्सी बांध रखी थी मैंने...कपड़े सुखाने के लिये...

"यस !"

उसके हाथ ऊपर उठाये....स्तन और भी तन गए...अब मैं जायजा लेने और भी करीब पहुँच गया... वह रस्सी तक नहीं पहुँच पा रही थी... पास पड़ा स्टूल खिसकाया.. उसपे चढ़ के सुखाने लगी.... मैं उसके सामने खड़ा था...उसके मधुघटद्वय के ठीक नीचे... उसने दोनों हाथ उठाये और सन्तुलन खोने के कारण भरभरा के मेरे ऊपर आई... मैं इस अप्रत्याशित घटना के लिये तैयार नहीं था.. प्रतिक्रिया में मैंने अपने दोनों हाथ उठाये.. ठीक वैसे ही जैसे कोई चीज़ सिर पे गिरने वाली हो और आप बचना चाहते हों....

स्टूल एक तरफ़ लुढका... वो मेरे ऊपर गिरी... उसके दोनों सुरा-कलश मेरे हाथों में आ गये... मैं उन्हें पकड़े-पकड़े नीचे गिर पड़ा.... उसके लम्बे-घने-खुशबूदार बाल मेरे चेहरे पर आ गये... उसके गाल मेरे गाल से सट गये... उसके होंठ मेरे कनपट्टी के नीचे... और मैं उसकी तेज़-तेज़ चलती साँसों को महसूस कर रहा था।

उसने अपने स्तनों को छुड़ाने की चेष्टा नहीं की.. मैंने खुद ही अपने हाथ हटा लिये... उसके स्तन मेरे सीने से चिपट गये और मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे उसने धीरे से मेरे गर्दन में चूमा हो..

मेरे पूरे शरीर में करंट दौड़ गया... लंड की नसों और रगों में गरम खून उफ़नने लगा.... मेरा लोवर पतले वूलकॉट का होने के कारण लंड का कठोरता का अहसास स्मिता को हो चुका था और मुझे उसकी चूत के उभार का... उसने अपने चूत को लंड के ठीक ऊपर लाकर थोड़ा सा दबाव बढ़ाया... दिल की धड़कन... लंड की फ़ड़कन और चूत का स्पंदन... तीनों तेज हो गये थे...

अब मैं समझ चुका था कि स्मिता चाहती क्या है....

मैंने उसके मांसल नितम्बों को पकड़कर अपने लंड पे और दबाव बढ़ाया... उसने मुझे इतनी जोर से भींचा कि उसके स्तन पिघलने से लगे... और उसकी गर्मी से मैं पिघलने लगा...

उसने अपने सुलगते हुये होंठ मेरे होंठों पे रख दिये और मैं बेसाख्ता उन्हें चूसने लगा...

उसने अपने चूतड़ हिलाना शुरू कर दिया... उसने अपने हाथ फ़र्श पर टिकाये और चेहरा और कंधा ऊपर उठाया...मैंने उसके शर्ट के ऊपर के दोनों बटन खोल दिये और दोनों गोलाइयों को अपने हाथ में ले लिया... थोड़ा सहलाया... चुचूक पे चुटकी काटी और मुँह में लेकर चूसने लगा...

स्मिता सिसकारी भरते हुये अपने चूतड़ों को ऊपर नीचे करने लगी।

उसने मेरे लोवर के अंदर हाथ डाल कर मेरा लंड पकड़ लिया... अपनी तर्जनी से सुपाड़े के सुराख का जायजा लिया जिसमें लसलसा प्रि-कम निकल रहा था....

Copyright © Indian Porn Empire - 2009. All Rights Reserved.

अचानक वो नीचे की तरफ़ सरकी, मेरा लोवर पूरा उतार दिया और मेरे तन्नाये हुये लंड को चूमने-चाटने लगी...

मैं बेकाबू होता जा रहा था... लंड चूसते-चूसते उसने अपनी गांड घुमा के मेरे मुँह के सामने कर दिया.. मैं इशारा समझ गया... उसकी सलवार का नाड़ा खोला और उसकी पैंटी सरका दी..

एक मदहोश कर देने वाली सुगंध से मेरे नथुने भर गये... उसकी टाँगों को चौड़ा करके मैंने अपनी जीभ उसकी योनि की पंखुड़ियों के बीच धंसा दी... बीच-बीच में अपनी उंगली उसकी चूत में घुसेड़कर उसके जी-स्पॉट को छेड़ देता था और फ़िर जीभ की नोक से उसके क्लाइटोरिस को चाटने लगा....

स्मिता अपने चूतड़ों को ऊपर नीचे हिलाने लगी... दस मिनट के बाद हम वुमन-ऑन-टॉप पोज़िशन पे आ गये... स्मिता जैसे ही सीधी होकर मेरे ऊपर आई मैंने उसने चूचकों को अपने मुँह के हवाले कर दिया। वो अपने चूतड़ उठाकर मेरे लंड के सुपाड़े को चूत के फ़ाँकों में रगड़ने लगी। जब चूत पूरी तरह गीली हो गई तो उसने धीरे से सुपाड़ा चूत के अंदर ले लिया...

थोड़ी देर तक ऐसे ही पूरे तरह फ़ूले हुये सुपाड़े का साइज़ नापने के बाद और हाथ से पकड़ कर लंड की लम्बाई का अंदाजा लगाने के बाद, पूरी तरह इस बात से आश्वस्त होने के बाद कि वो इस लम्बाई को झेल लेगी, वो धीरे से नीचे बैठी और मेरा लंड करीब चार इंच अंदर धंस गया।

"आआआह" वो थोड़ा सा तड़पी... और उतना ही अंदर डाले-डाले करीब दो मिनट तक ऊपर-नीचे हिलती रही, फ़िर एक झटके के साथ पूरा नीचे बैठ गई और उसकी चूत ने मेरा पूरा साढ़े आठ इंच का लंड निगल लिया... पूरा साढ़े आठ इंच.... चूत की लीला अपम्पार है!

एक चीख सी निकली स्मिता के कंठ से और शरीर ऐंठने सा लगा... चुपचाप बैठकर... लंड को निगले हुये वो दर्द पीती रही... जब दर्द का अहसास कम हुआ तो फ़िर से चूतड़ हिला-हिलाकर मुझे चोदने लगी... जिन आंखों में चंद लम्हों पहले असीम दर्द था... अब उनमें चमक थी... मस्ती थी... नशा था... उन्माद था...

जिस चूत में सुपाड़ा भी बमुश्किल जा रहा था उसमें मेरा पूरा लंड बल्कि मेरा पूरा वज़ूद समाया हुआ था...!

कॉलेज में किसी ने ये लाइनें सुनाई थीं:

पहले तो न जाती थी कील चूत में

और अब तो बन गई है झील चूत में

एक दिन घुस गई चील चूत में

वहाँ उसको मिल गया वकील चूत में

वकील ने ठोक दी अपील चूत में

कि मैंने तो लगाई थी सील चूत में

फ़िर किसने बना दी झील चूत में

इतना कोमल होती है यह चूत कि एक इंच का कड़ा सुपाड़ा भी उसके लिये कष्टप्रद होता है...और इतनी लचकदार होती है यह चूत कि चार इंच से लेकर आठ-नौ इंच के लंड को निगल सकती है....!

हे चूत...तुझे नमन है...प्रचंड लंड का नमन...!!!

फ़िलोसॉफ़ी बहुत हुई... बहरहाल... जब उसके दर्द का अहसास कम हुआ तो फ़िर से चूतड़ हिला-हिलाकर मुझे चोदने लगी..

Copyright © Indian Porn Empire - 2009. All Rights Reserved.

और मैं भी नीचे से पिल पड़ा... कभी उसके चूतड़ों को भींचकर... कभी उसके स्तनों को भींचकर...

चालीस मिनट के जद्दोज़हद के बाद आखिर हमें मंज़िल मिल ही गई... स्मिता निढाल होकर मेरे ऊपर लेट गई... ना वो मेरी प्रोजेक्ट स्टूडेंट रही... ना मैं उसका गाइड रहा... सब बराबर हो गया था... कोई अंतर नहीं था...

करीब दस मिनट बाद मैंने उसका चेहरा उठाया और चूम लिया... और उसने मुझे बांहों में कस लिया...

बाहर बारिश भी थम चुकी थी...

हम दोनों उठे... उसके कपड़े सूख चुके थे... उसने कपड़े पहने....

अपना पर्स उठाया.. मुझे किस किया और शोखी से मुस्कुराये हुये कहा,"अगर मैं आपको एक राज़ की बात बताऊँ तो आप नाराज़ तो नहीं होंगे?"

"नहीं...बोलो !"

उसने अपना पर्स खोला और अपना मोबाइल निकालकर दिखाया..

मैं भौंचक.."तो तुमने झूठ कहा था कि तुम अपना मोबाइल भूल गई थी ?"

"सर आपने वादा किया था... आप नाराज़ नहीं होंगे... जबसे शशि ने मुझे आपके किंग साइज़ प्राइवेट पार्ट्स के फ़ोटो दिखाये थे तबसे मैंने ठान लिया था.. कि अगर मेरी जवानी किसी के लिये बेनकाब होगी, बेपर्दा होगी..तो इसी के लिये होगी"

"तो वो तुम्हारा बस छूटना..."

"सब प्लानिंग थी सर... मैं तो अपनी स्कूटी लेकर आती हूँ..." उसने खिलखिलाते हुये राज खोला।

मैं उल्लू की तरह उसे देख रहा था... फ़िर मैंने पूछ ही लिया,"तुमने तो इतना खूबसूरत शरीर पाया है... आज अगर तुम यहाँ नहीं आती तो मुझे पता भी नहीं चलता.. लेकिन तुम ये सब इतना छुपा-छुपा के क्यों रखती हो...?"

"मेरा परिवार थोड़ा दकियानूसी ख़यालों वाला है.. और हमें अपने आपको अच्छा दिखाने का अधिकार नहीं है !"

"बट यू आर फ़ैबुलस.. !"

"थैंक्स फ़ॉर द कॉम्प्लिमेंट... और आप भी सर.. कितने अच्छे हैं.. .कितने पैशनेट और पावरफ़ुल लव्हर हैं.... आपकी बीवी कितनी खुशकिस्मत होगी !"

हम दोनों ने एक दूसरे को बांहों में भरा... उसने फ़ुसफ़ुसाते हुये मेरे कानो में कहा,"आपके फोटोग्राफ़्स नेहा ने भी देखे हैं... और वो जल जायेगी जब मैं उसको आज की बात बताऊँगी... बाय सर !"

"टेक केयर !"...मैं किंकर्तव्यविमूढ खड़ा रह गया...

फ़िर नेहा का मासूम चेहरा मेरी आंखों के सामने घूम गया... और मेरे होठों पे एक भेदभरी मुस्कान ना चाहते हुये भी आ ही गई !

douwannapartner@rocketmail.com

शब्दार्थ :

मधुघटद्वय- मधु यानि शहद, घट यानि घड़ा, द्वय यानि जोड़ा !

शहद भरे घड़ों का जोड़ा !

०१ जनवरी, २०१०

पृथ्वी के उज्ज्वल भविष्य के लिए पानी, ऊर्ज़ा बचाएँ !

Copyright © Indian Porn Empire - 2009. All Rights Reserved.